Govt. Degree College, Bagaha - 1 (W. Champaran)

Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Muzaffarpur (Bihar)

B.A. Part-1 (Hons.)

Paper - 1

## Topic

ग्लोबल वार्मिंग

Dharmesh nanda
Assistant Professor (G
Geography Department

# ग्लोबल वार्मिंग

प्रकृति ने समूचे जीवमंडल के लिए स्थल, जल और वायु के रूप में एक विस्तृत आवरण निर्मित किया है, जिसे हम 'पर्यावरण' के नाम से जानते हैं।

तांसले के अनुसार "प्रभावकारी दशाओं का वह सम्पूर्ण योग जिसमें जीव रहते हैं, पर्यावरण कहलाता है।" पर्यावरण के साथ मनुष्य, जीव-जन्तु का गहरा सम्बन्ध है इसलिए इसे (पर्यावरण) जब भी छेड़ा जाता है तो इसका सीधा प्रभाव पृथ्वी पर रहने वाले जीवों पर पड़ता है। पृथ्वी पर जब से मनुष्य अवतरित हुआ है, वह निरन्तर प्रकृति के नियम को तोड़ रहा है, परिणामस्वरूप आज हमारे पर्यावरण को वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण जैसी अनेक समस्याओं से जूझना पड़ रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण का एक भयावह रूप 'ग्लोबल वार्मिंग' (पृथ्वी के तापमान में वृद्धि) के रूप में हमारे सामने है। यह एक ऐसी समस्या है जिसके कारण समूची धरती के सागर में समा जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। ग्लोबल वार्मिंग की वृद्धि से कैसे निपटा जाये? इस प्रश्न पर विचार करने से पूर्व यह जानना भी आवश्यक है कि ग्लोबल वार्मिंग है क्या? यदि पिछले 10 वर्षों पर नजर डाली जाये तो इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं कि पृथ्वी के तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। 1990 का दशक 1980 की तुलना में अधिक गर्म रहा। पिछले 10 वर्षों में पृथ्वी के तापमान में 0.43 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि दर्ज की गई है। ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पर विचार हेतु सर्वप्रथम 1988 में एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति गठित की गई जिसने 1995 में अपनी रिपोर्ट में कहा कि विश्व की जलवायु पर मनुष्यों का स्पष्ट प्रभाव पड़ रहा और इसी कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, समुद्री सतह में वृद्धि हो रही है, बाढ़ और सूखे की सम्भावना बढ़ रही है और खाद्यान्न के उत्पादन में गिरावट आ रही है।

ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार मुख्य कारण $CO_2$ गैस (कार्बन डाई आक्साइड) है जिसे 'ग्रीन हाउस गैस' भी कहा जाता है। इसके अलावा मीथेन तथा नाइट्रस आक्साइड भी इसी प्रकार की गैस है जो वातावरण की ऊष्मा को सोख लेती है। ग्रीन हाउस गैस पृथ्वी पर आ रही सूर्य की किरणों के प्रति तो पारदर्शी होती है लेकिन पृथ्वी से परावर्तित इन्फ्रारेड रेडियेशन (विकिरण) को अवशोषित कर लेती है। वाहन तथा अन्य स्थानों पर जलने वाला ईंधन, कार्बन डाई आक्साइड व नाइट्रस आक्साइड गैसों को ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार हैं। कुछ प्रकार हैं - (1) हाइड्रो फ्लोरो कार्बन, (2) पर फ्लोरोकार्बन (3) सल्फरहेक्सा वैज्ञानिकों का मानना है कि इन गैसों में प्रत्येक की ऊष्माहर की क्षमता कार्बन डाई आक्साइड से कम नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) द्वारा नियुक्त वैज्ञानिकों के एक दल ने वातावरण में बढ़ रही $CO_2$ तथा अन्य सहयोगी गैसों के प्रभाव का अध्ययन कर भविष्यवाणी की है कि यदि इन गैसों (ग्रीन हाउस गैसों) का निष्क्रमण इसी तरह जारी रहा तो 21 वीं शताब्दी में पृथ्वी के तापमान में 1 से 3 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होगी जिससे बर्फ के बड़े-बड़े पहाड़ पिघल जायेंगे; परिणामस्वरूप समुद्री सतह में 15 से 30 सेमी. तक वृद्धि हो जाने की सम्भावना है जिससे समुद्र तटीय नगर व छोटे-छोटे द्वीप जलमग्न हो जायेंगे, साथ ही मौसम में तो विनाशकारी परिवर्तन आयेंगे ही!

क्योटो सम्मेलन - 21 वीं सदी में पृथ्वी को हद से ज्यादा गर्म होने से बचाने के लिए दुनिया भर के लगभग 140 देशों के सदस्य जापान के सबसे बड़े द्वीप हांशू के प्राचीन नगर क्योटो में 1 से 10 दिसम्बर, 1997 तक 10 दिन चला

क्योटो सम्मेलन में जारी समझौते के मसौदे में पृथ्वी को गर्म करने वाली 6 गैसों के प्रयोग में 8% की कटौती यूरोपीय संघ के देशों को, 7% की कटौती अमेरिका को तथा 6% की कटौती यूरोपीय संघ के देशों को, 7% की कटौती अमेरिका को तथा 6% की कटौती जापान को करने के लिए कहा गया है। क्योटो सम्मेलन में वैज्ञानिकों ने अपील की है कि $CO_2$ तथा अन्य गैसों का लगातार वायुमंडल में घुलना रोका जाये अन्यथा ये गैसें सूर्य के प्रकाश को अवशोषित कर लेंगी, परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान बढ़ जायेगा, बर्फ के महाद्वीप पिघल जायेंगे, समुद्री सतह (Sea Level) ऊपर आ जायेगी जिससे प्राकृतिक जलवायु क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन आ जाने की संभावना है। क्योटो के शिखर सम्मेलन में एक दल (लॉबी) ऐसा भी था जिसने पृथ्वी के वातावरण को ताप वृद्धि से बचाने के लिए परमाणु ऊर्जा के विकल्प को सुझाया। क्योटो सम्मेलन के अध्यक्ष रस्त्राडा ने संधि के दिन को 'वायुमंडल का दिन' बताया।

पृथ्वी के जलवायु परिवर्तन का समाधान तब तक नहीं हो सकता जब तक सभी देश मुख्यत: विकसित देश कदम नहीं उठाते। आज प्रदूषण जलवायु परिवर्तन या ओजोन ह्रास जैसी घटनाओं ने जो स्थिति उत्पन्न कर दी है उससे कहीं बाढ़, कहीं अचानक शीत तो कहीं जंगल में लगी आग के दुष्परिणाम भोगने पड़ रहे हैं।

पर्यावरण के प्रसंग पर पहला अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 1972 में स्टाकहोम में हुआ। इसके बाद 14 जून 1992 को ब्राजील के शहर रियोडी जेनेरो में पृथ्वी सम्मेलन' हुआ जिसमें पर्यावरण [redacted] के लिए एजेंडा 21 पारित हुआ।